

संपादकीय

प्रिय पाठकगण, सप्रेम नमस्कार और आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

प्रकाश पर्व का यह पावन अवसर केवल दीप जलाने का नहीं, बल्कि हमारे हृदय और मन के अंधकार को उजाले में बदलने का प्रतीक है। दीपावली, अंधकार पर प्रकाश की जीत का पर्व है, और उसी संदेश को अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए हम प्रस्तुत कर रहे हैं “शब्दक्रांति” का यह पहला अंक। यह पत्रिका केवल रचनाएँ प्रकाशित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि विचारों, संवेदनाओं और चेतना का वह मंच है, जहाँ हर शब्द अपने आप में क्रांति और उजाला लेकर आता है।

दीपावली हमें यह याद दिलाती है कि जीवन के प्रत्येक कोने में उजाला फैलाना हमारी जिम्मेदारी है। छोटे-छोटे प्रयास, संवेदनशील विचार, और रचनात्मक शब्द समाज में प्रकाश फैलाने का सबसे प्रभावी माध्यम हैं। उसी दृष्टि से इस अंक में हमने ऐसी रचनाओं का समावेश किया है जो पाठकों के मन में सृजनात्मक चेतना और मानवीय संवेदनाएँ जगाएँ। कविता के मधुर स्वर, कहानी की वास्तविकता, और लेखों की गहराई — प्रत्येक पंक्ति में यही प्रयास है कि वह पाठक के हृदय में दीप की तरह उजाला फैलाए।

इस अंक में हम केवल साहित्यिक आनंद ही नहीं प्रदान कर रहे, बल्कि संस्कृति और मूल्य भी उजागर कर रहे हैं। हर रचना में जीवन के विभिन्न रंग और भाव हैं — प्रेम और वियोग, संघर्ष और सफलता, प्रतीक्षा और आशा। पाठकगण, हमारा यह प्रयास है कि आप “शब्दक्रांति” के माध्यम से विचारशील और संवेदनशील बनें, और अपने आसपास के समाज में प्रकाश फैलाने का संकल्प लें।

दीपावली केवल त्योहार नहीं, बल्कि मानव मन की अंधकारमुक्ति की प्रतिकृति है। यह हमें सिखाती है कि अंधकार चाहे कितना भी घना क्यों न हो, एक दीपक की लौ हमेशा रास्ता दिखाती है। ठीक इसी प्रकार, साहित्य के दीप से भी मानव जीवन में ज्ञान, प्रेम और मानवता का उजाला फैलाया जा सकता है। हमारी पत्रिका यही प्रयास करती है कि हर अंक में रचनाओं के माध्यम से पाठक के मन में संवेदना और जागरूकता उत्पन्न हो।

हम मानते हैं कि शब्द केवल भावों का संचार नहीं, बल्कि समाज में परिवर्तन और चेतना के वाहक हैं। जब एक सच्चा शब्द जन्म लेता है, तो वह पाठक के हृदय में आशा की लौ जगाता है, और यही लौ मिलकर बनती है “शब्दक्रांति” की ज्योति। इस अंक में प्रकाशित प्रत्येक रचना इसी उद्देश्य से चुनी गई है — चाहे वह कविता हो, कहानी हो, लेख हो या बाल साहित्य। हमारे रचनाकारों और पाठकों का यह सहयोग ही इस पत्रिका की सबसे बड़ी पूँजी है। आप सभी के सुझाव, प्रतिक्रियाएँ और प्रेम हमें और बेहतर बनाने की प्रेरणा देंगे। हम चाहते हैं कि “शब्दक्रांति” केवल कागज़ पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका न रहकर, आपके हृदय में भी साहित्य और संस्कृति का दीप जलाए।

आइए, इस दीपावली पर हम सभी मिलकर शब्दों की रोशनी से अंधकार मिटाएँ, समाज और जीवन में उजाला फैलाएँ, और साहित्य की इस ज्योति को एक नई क्रांति की ओर अग्रसर करें। हमारी कामना है कि “शब्दक्रांति” आपके जीवन में उत्साह, प्रेरणा और सृजन का संदेश लेकर आए।

रमाकांत यादव (सागर यादव ‘जख्मी’)

संपादक- शब्द क्रांति मासिक ई-पत्रिका